कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

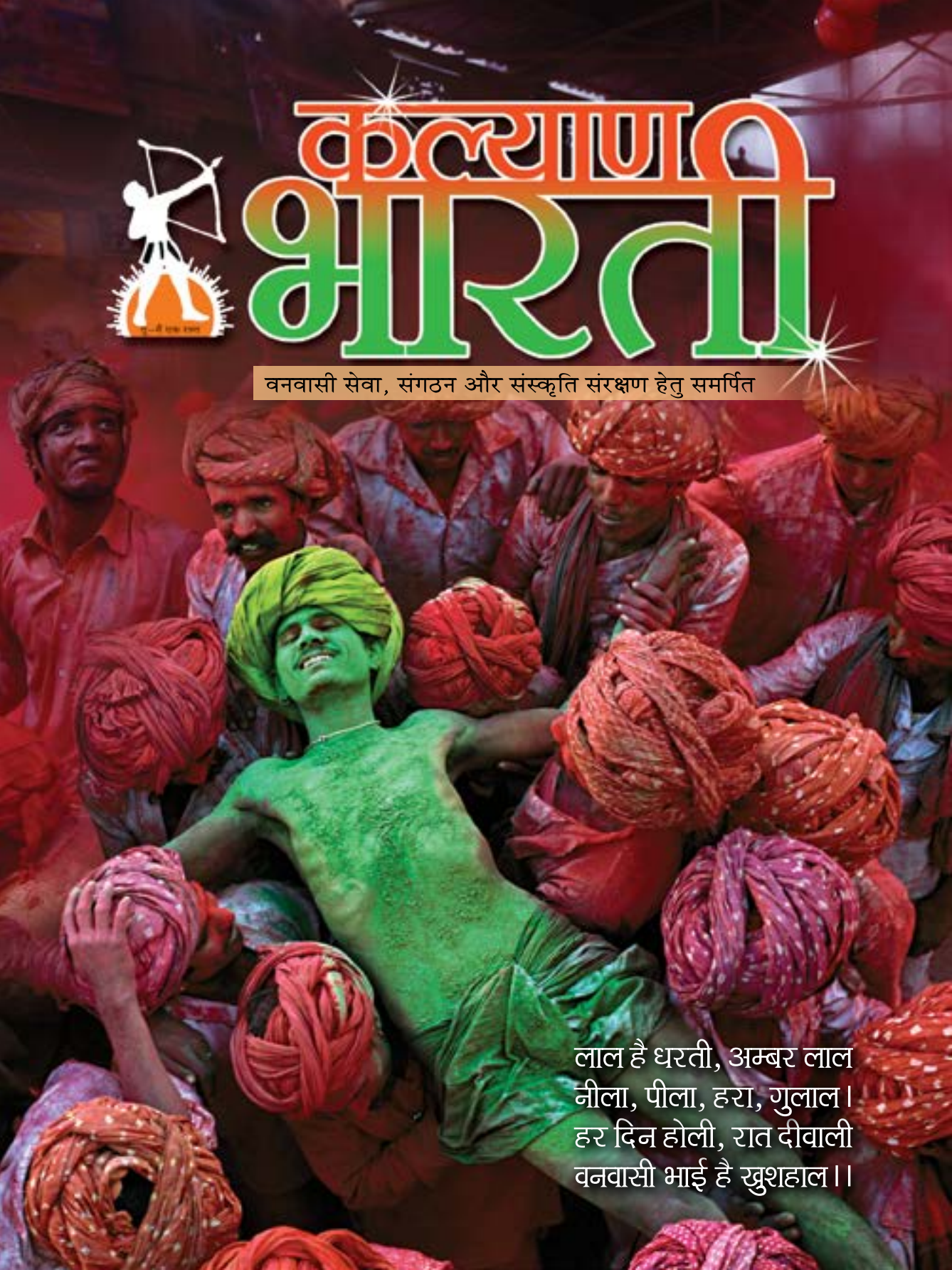

लाल है धरती, अम्बर लाल
नीला, पीला, हरा, गुलाल।
हर दिन होली, रात दीवाली
वनवासी भाई है खुशहाल।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 27, अंक 1
जनवरी-मार्च 2016 (विक्रम संवत् 2073)

सम्पादक
स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,
गुलमोहर पार्क के पास
हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय 2
- आद्य सरसंघसंचालक डॉक्टर... 3
- आभिनंदन 6
- विक्रम संवत् का महत्त्व 7
- बेड़पा गाँव में भजन सत्संग कार्यक्रम 8
- वनबंधु के सरोकारों से जुड़ने... 9
- वनभोज सम्पन्न 10
- वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा ... 10
- 36वें वार्षिकोत्सव में जागरण नाटक... 11
- भारतीय राष्ट्रीय पंचांग या ... 11
- सप्तदिवसीय चिकित्सा शिविर ... 12
- बालीगंज समिति की बहनों के अनुभव ... 12
- सप्तम् राष्ट्रीय वनवासी क्रीड़ा महोत्सव ... 13
- वीरमाता सुमित्रा देवी का निधन 14
- रानी गाईदिन्ल्यू की गाथा को पाठ्यक्रम में ... 15
- अनुकरणीय 15
- बोधकथा ... सबसे सुखी 16
- कविता ... पं. दीनदयाल उपाध्याय की ... 16

संपादकीय...

वनबन्धु को प्रेम के रंग में सराबोर करें

हर्ष और उल्लास, सुख और आनंद, प्रेम और माधुर्य भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व हैं। भावों का यह अतिरेक उत्सवों के रूप में सर्वाधिक प्रभावी ढ़ंग से अभिव्यक्त होता है। सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय जनमानस प्रेम, उल्लास और आनंद से आप्लावित है अतः उनकी अभिव्यक्ति भी उतनी तीव्रता और विविधता से करने के लिए इस देश में इतने अधिक त्यौहार और उत्सव मनाये जाते हैं कि भारत को यदि त्यौहारों का देश कह दिया जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। भारतीय जनजीवन में मनाए जाने वाले त्यौहारों में होली का अपना अलग ही महत्व है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह त्यौहार आपसी प्रेम और सद्भाव को बढ़ाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह त्यौहार रंग और गुलाल आदि से खेला जाता है। लोग एक-दूसरे पर विभिन्न प्रकार के चटख रंग, अबीर, गुलाल डालते हैं और आपस में गले मिलकर खुश होते हैं। खुशी के इस वातावरण में लोग साल भर की कटुता और वैमनस्य को भूलकर प्रेम में डूब जाते हैं। लोकजीवन में तो होली हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति का अनुपम अवसर है। फाल्गुन मास शुरु होते ही होली की तैयारी शुरु हो जाती है। द्वार-द्वार पर ढ़ोलक, झाँझ, मजीरे झनकने लगते हैं और रससिक्त मधुर फाग गीत गाये जाते हैं। होली के दिन होली खेलने वालों की टोली जब रंग गुलाल लेकर निकलती है तो बिना किसी भेदभाव के सभी को प्रेम के रंग में सराबोर करती चली जाती है। किन्तु इसका दूसरा पक्ष यह है कि आजादी के पश्चात् जो मनुष्यता का क्षरण आरम्भ हुआ वो आज लगभग अपने चरम पर पहुँच गया है। आज कहीं भी ढ़ंग का प्रतिरोध नहीं हो रहा है और मानव ने असंवेदनशीलता की हदों का अतिक्रमण सा कर दिया है ! हर तरफ गैर-बराबरी और अव्यवस्था, शोषण, बहुविध जन-समस्याएँ और हाहाकार। जब तक देश में सबको रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और रोजगार का समुचित अवसर उपलब्ध नहीं हो तब तक सही मायने में जश्न मनाना गुनाह है। 10 करोड़ का वनवासी समाज भारतवर्ष के वृक्ष की जड़ें हैं जिनकी हमने घनघोर उपेक्षा की है। जिन्होंने राम के साथ अपना जीवन कुर्बान किया, वे ही राम के देश में इतने उपेक्षित हैं, तो राम राज कैसे आयेगा? जो इस देश की आधारशिला हैं, प्राण बिन्दु हैं, जिनके साथ बैठकर महापुरुषों ने वेद और शास्त्रों की रचना की - वे ही यदि उपेक्षित हैं तो हम इस देश के सुखी होने की कल्पना कैसे कर सकते हैं? जिनकी जमीन को चीरकर निकाला जा रहा है तेल, लोहा, कोयला - वे ही आज उपेक्षित हैं। जिनकी कृपा से नगरवासी सुखी सम्पन्न हैं, उनको दवाई के लिए दूर-दूर तक अस्पताल उपलब्ध नहीं, दूर-दूर तक मंदिर नहीं, इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है? इस विषाक्त माहौल में कल्याण आश्रम ने सदियों से बिछड़े वनवासी बन्धु को गले लगाने एवं उन्हें आत्मीयता और प्रेम के रंग से रंगने का संकल्प लिया है। इस परम कार्य में जन-जन की भागीदारी अपेक्षित है। कल्याण भारती के सभी पाठकों को हिन्दू नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार 8 अप्रैल 2016 एवं रंगों के त्यौहार होली की हार्दिक शुभकामनाएँ। इति शुभम्

- स्नेहलता बैद

125वीं जयन्ती पर विशेष

आद्य सरसंघसंचालक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार

- माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (गुरुजी)

जब सब ओर विरोध का वातावरण था, अपने कहलाने वाले लोग भी जब पागल कहते थे, तब उस एक पुरुष की वाणी सबने सुनी और उनको सुननी ही पड़ी। आज तो हम लाखों की संख्या में एक ही वाणी बोल रहे हैं। लोग अवश्य सुनेंगे। अकेले डॉक्टरजी की बात के पीछे उनका अटल विश्वास, ध्येयनिष्ठा, तपस्या, पराक्रम, परिश्रम और श्रेष्ठ चारित्र्य था, इसीलिए लोगों को उनकी वाणी को सुनना पड़ा। हम भी उन्हीं के अनुयायी हैं, जिसने अपने जीवन को होम कर संघ को तेज प्रदान किया। लोगों को हमारे साथ आना ही होगा, यह दृढ़ विश्वास लेकर हम चलें। एक-एक कदम सोच-सोचकर रखें। स्थिरता और दृढ़ता कार्य में हो सके, इनका सदैव ध्यान रखकर कार्य करेंगे तो कार्य बढ़ेगा। हमें जल्दबाजी नहीं करनी है। हमें तो केवल तपस्वी जीवन बिताने और सर्वस्व होम करने की तैयारी करनी है। हमारा होम, हमारी उपासना और कर्त्तव्य में है। यहाँ से हम जो शिक्षा लेकर जा रहे हैं, उसका प्रमाण हमारे कर्तव्य से, हमारे उज्ज्वल चारित्र्य से मिले। बड़प्पन की भावना व्यर्थ है। मेरे बिना कार्य नहीं चलेगा, यह भावना कभी हमारे मन में न आये। संघ के संस्थापक की महान अखंड ज्योति के तिरोधान होने पर भी यह कार्य बढ़ता ही जा रहा है। संघ की गति अप्रतिहत है। फिर गर्व करने को हमें स्थान कहाँ ? सदा यही विचार हो कि कार्य करते-करते मर जायेंगे तो भी कोई हानि नहीं। हमारे बिना भी हमारे पीछे संघ कार्य उसी प्रकार बढ़ता रहेगा।

हठात् जीवन को मिटाना भी नहीं है। कार्य करते-करते स्वाभाविक मृत्यु यदि आ जाये तो डरना भी नहीं है। अतएव कार्य से उन्मत्त हो जीवन सर्वस्व को संघ के लिए अर्पण करें। लोगों के विरोध से विचलित न होवें। जिसे ध्येय का साक्षात्कार नहीं हुआ उसे ही लोभ, मोह, भय आतंकित किया करते हैं। "आनंदं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन।" वह किसी से डरता नहीं, निर्भय होकर चलता है। जिसने हृदय का कोना-कोना कार्य से, ध्येय से भर दिया उसको कोई रोक नहीं सकता। अपनी शक्ति के अनुसार कार्य को सफल बनायें।

संघ के लिए हम हैं, हमारे लिए संघ नहीं है, यह धारणा प्रत्येक स्वयंसेवक की होनी चाहिए। "सामुद्रो हि तरंग: क्वचन समुद्रो न तारंग:" अर्थात् तरंग समुद्र का अंग है, समुद्र से पृथक् तरंग का अस्तित्व नहीं है। यह अभेदता आवश्यक है। कुशलता, कला, समयज्ञता, दृढ़ता आदि गुण तन्मय वृत्ति अपनाने से निर्माण होते हैं।

उपदेश नहीं संस्कार

डॉ. हेडगेवार ज्ञानी नहीं थे। वे अंत:करण गढ़ते थे। उन्होंने जो प्रेरणा दी, उसका तेज आज भी वैसा ही चिरंतन है। एक बार भूल से मैंने उनका भाषण सुना। मुझे अपनी बुद्धिमत्ता पर बड़ा घमंड था। परन्तु उनके भाषण में ऐतिहासिक संदर्भ, तत्वज्ञान की चर्चा, सिद्धांतों का खंडन-मंडन नहीं था। वे बोले, "स्वयंसेवक बंधुओं, निष्ठा और प्रेमपूर्वक संघ-कार्य करो।" उनके भाषण में कोई विद्वत्ता नहीं थी किन्तु उस भाषण में स्नेहार्द्रता थी। मेरे विद्वत्ता के आवरण को भेदकर वह स्नेहार्द्रता रिसती गई। मैं विद्वान था, उनके भाषण में लगन थी। वह पग-पग पर अनुभव हो रही थी। उनकी व्याकुलता मेरे हृदय में रिसती गई। जब-जब उनसे भेंट हुई उनके सहवास

से मुझमें विलक्षण परिवर्तन हो गया और मेरे जीवन को निश्चित दिशा मिली। उन्होंने कोई सिद्धांत-चर्चा नहीं की, फिर भी मेरा घमंड गल गया, मुझमें संस्कार समाने लगे।

अंत:करण संघ के साथ समरस

डॉक्टरजी ने मेरे अभिमान को झकझोर डाला। मेरी विद्वत्ता उनके सामने नहीं टिकी। मेरे मन में संघ का प्रवेश हुआ। संत ज्ञानेश्वर कहते हैं, "यह अनुभव से होता है, बोलने से नहीं।" इस तरह के समर्पण में दु:ख और क्षोभ नहीं है। अहंकारी को नम्र होना पड़े तो वह बहुत क्रोधित होता है। परन्तु मुझे इन संस्कारों से शांति मिली। कारण एक ही था कि उनका हृदय बहुत विशाल था। उसके कारण ही यह सहजता से हुआ। घड़े में मकान डूबता नहीं है, किन्तु महासागर में सब कुछ डूब जाता है। उनके अंत:करण में शत्रु, मित्र सभी के लिए स्थान था। निरपेक्ष देश-सेवा के अलावा अन्य विचारों का कोई स्थान नहीं था।

उनकी प्रत्येक कृति में संघ भरा रहता था। बोले गये प्रत्येक शब्द का तात्पर्य संघ रहता था। उनका अंत:करण पूर्णतया संघ के साथ समरस हो गया था। उनकी बैठक में एक बार भी जाने से लगता था कि संपूर्ण वातावरण में संघ है। डॉक्टरजी के समान जिसके मन की अत्युत्कट अवस्था होती है, उसका मौन भी व्याख्यान होता है। सत्य तो यह है कि मनुष्य को बुद्धिवाद से जीतना संभव नहीं है। संघ तो सहवास से समझ में आता है।

संघ वृत्ति कैसे निर्मित की जाए, यह संघ-निर्माता का जीवन बतलाता है। अत्यंत विशाल अंत:करण, स्वयंसेवकों पर माता-पिता से भी अधिक उत्कट और अलौकिक प्रेम, उज्ज्वल चारित्र्य, अत्यंत प्रखर कार्यनिष्ठा के कारण यह संभव हुआ। जैसे मूर्तिकार पाषाण में से मूर्ति का निर्माण करता है, उसी प्रकार अत्यंत कुशलता से बुद्धि का कवच तोड़कर स्वयंसेवकों के मन पर संस्कार कर डॉक्टरजी ने उन्हें आकार दिया।

परमपिता के समान पूर्णता प्राप्त करने के लिए पहले स्वयं पूर्ण बनो। इसी प्रकार लोगों पर संस्कार करने के पूर्व स्वयं को संस्कारित करना होगा। डॉक्टरजी के समान ज्वलंत, प्रखर व निष्ठावान बनो।

डॉक्टरजी का अंतरंग सहज प्रकट नहीं होता था। वे तो पालथी मारकर युवकों के बीच हास्य-विनोद करते हुए बैठे दिखाई देते थे। यह हास्य-विनोद संघ-प्रासाद की नींव थी। इस हास्य-विनोद के पीछे न उलझने वाला कठोर बल था। संघ के समान असाधारण कार्य पूर्ण निष्ठा के बिना असंभव है। स्वर्ण के कण-कण को तोड़ा जाय तो भी शुद्ध स्वर्ण ही मिलता है, उसी प्रकार अपने मन का कण-कण संघमय रहना चाहिए। अखंड तैलधारावत् एकाग्र वृत्ति रहनी चाहिए। सारे व्यवहार संघ के लिए ही हों।

मशक्कत की गई जमीन हमें मिली है

दूसरे के शरीर से एक बूंद भी रक्त बहते देखकर व्याकुलता अनुभव करने वाली स्नेहमयता और कार्य के प्रति प्रखर निष्ठा डॉक्टर जी के पास थी। इसीलिए चट्टान पर वाटिका खिली। अत्यंत परिश्रम करके और अपना रक्त सींचकर डॉक्टरजी ने यह जमीन जोती। हमें यह जमीन उपलब्ध हुई है। स्वयंसेवक एकाग्र मन से कार्य करें, हृदय विशाल हो, स्नेह से लबालब भरा हो। डॉक्टरजी सरीखी हमारी अवस्था हो तो हमारे राष्ट्र का भाग्योदय बिल्कुल समीप है। उतनी मर्यादा, प्रखरता और स्नेहमयता तक हमें पहुँचना है। डॉक्टरजी संघ के जन्मदाता हैं, हम उनके अनुयायी हैं और जिम्मेवार

अधिकारी हैं। गंगा में हम लोग पूरी डुबकी लगाते हैं तो अंतर्बाह्य शुद्ध होते हैं। इसी प्रकार प्रखर ध्येय-निष्ठा से यदि हम काम में जुट जाएं और अपने आचरण में वह ध्येय-निष्ठा प्रकट करें, तो कार्य-वृद्धि में विलंब नहीं होगा।

स्वभाव में उग्रता नहीं होनी चाहिए

कर्तृत्वाभिमान से उग्रता बढ़ती है। मनुष्य न बोलने योग्य बोलने लग जाता है, न करने योग्य करने लगता है, तेज वाणी के बिना उसे संतोष नहीं होता। भारत जैसा बकबक करने वाला अन्य देश नहीं है। इससे काम नहीं होता। अपने डॉक्टरजी के भाषण सरल, शुद्ध और सात्विक होते थे किन्तु उन शब्दों में पत्थर तोड़ने की प्रचंड शक्ति होती थी। 1940 के संघ शिक्षा वर्ग में बीमार होने के कारण वे निद्रा-शून्य अवस्था में रहते थे। अंत में वे केवल दस मिनट बोले। उस भाषण में युद्ध, तलवार, भाला, बंदूक, बमविस्फोट, रक्त आदि शब्दों का बिल्कुल उल्लेख नहीं है। भावनावश कुछ स्वयंसेवक तो मूर्च्छित हो गए। इतनी बोलने की कुशलता उनमें थी। श्रेष्ठ कर्तृत्व करते हुए भी अभिमान यत्किंचित भी नहीं था।

उग्र बोलने से वृत्ति नहीं बनती है। "अधजल गगरी छलकत जाय" परन्तु अत्यंत गहरा गंगा का प्रवाह अत्यंत शांति से बहता है। उग्र भाषण से क्षण भर भावनायें भड़क सकेंगी। बहुत कर्तृत्व हो तो बहुत मौन चाहिए। लोग कितनी ही टीका-टिप्पणी करें। संघ कार्य के लिए गोपनीय कागजात आवश्यक नहीं हैं। यहाँ मन पर दृढ़ और स्थायी संस्कार होते हैं। हमारे हिन्दू समाज में निरंतरता का अभाव है, फिर भी कितने लोग यहाँ निरंतर कार्य कर रहे हैं। यह प्रत्यक्ष कृति से संभव हुआ है, दृढ़ संस्कारों की परिणति है। केवल बोलने से नहीं हुआ है।

सरल और संयमित भाषण

भाषणों में व्यर्थ रक्त-मांस का उल्लेख करना हास्यास्पद होता है। भाषण सरल और शुद्ध, परन्तु मन को आकर्षित करने वाला संयमपूर्ण हो।

मन पर संघ का पागलपन सवार हो। मन तेजस्वी हो परन्तु वह काबू में हो। मन संस्कारित हो तो इंद्रियां अधीन रहती हैं। संयमपूर्ण आचरण दूसरे के मन में आदर पैदा करता है। यद्यपि अत्यन्त प्रक्षोभजनक, उद्वेग पैदा करने वाली घटनायें होती हों, तो भी अपना धीरज और गंभीर वृत्ति नहीं छोड़नी चाहिए। लोगों के उपहास के प्रति मौन रहना चाहिए। हमें संगठन करना है। अहंकार-त्याग ही सर्वस्व त्याग है। अहंकार का त्याग करने के पश्चात् त्याग करने को कुछ भी शेष नहीं बचता।

एक और तीन प्रतिशत की सीमा

डॉक्टरजी चाहते थे कि नगरों में तीन प्रतिशत और गाँवों में एक प्रतिशत ऐसे स्वयंसेवक तैयार किए जाएं, जिनका जीवन संघर्षमय हो। समाज के विश्वास और आदर के पात्र तीन और एक प्रतिशत स्वयंसेवक हों, तो हम हिन्दू समाज को अपनी इच्छानुसार चला सकते हैं। केवल श्रद्धा ही पर्याप्त नहीं है, बुद्धिमत्ता और नेतृत्व-कुशलता का भी योग चाहिए। स्वयंसेवक ऐसा चाहिए, जो किसी भी स्थिति में प्रेम के अनुशासन से लोगों का नेतृत्व ग्रहण कर, उनका योग्य मार्गदर्शन कर सके। संघ कार्य से समाज बलवान बनता है।

संघ-भूत का संचार

उत्कृष्ट स्वयंसेवक ही उत्कृष्ट अधिकारी बन सकता है। डॉक्टरजी स्वयंसेवक से पूछते थे कि "तेरे शरीर में संघ-भूत का संचार हुआ या नहीं ?" इसका अर्थ है कि जो संघ कहेगा उसके अनुसार व्यवहार करना, संघ के

विचार और व्यवहार के अनुसार प्रत्यक्ष आचरण करना। तीन प्रतिशत और एक प्रतिशत उत्तम स्वयंसेवक तैयार करने की डॉक्टरजी की इच्छा पूरी नहीं हुई। हमें अधिक मेहनत करनी चाहिए। संघ का एक गीत है- एकनिष्ठ सेवक हूँ मैं, यही मेरा मोक्ष है। संघ कार्य ईश्वरीय कार्य है। घर में भी सभी को प्रसन्न रखें।

अविचल श्रद्धा

हमें यही एक कार्य स्वीकार करना चाहिए। देश सेवा के अनेक मार्ग हैं। "सर्व-देव-नमस्कार: केशवं प्रति गच्छति।" यह सही है। परन्तु प्रत्यक्ष केशव सामने हो तो अन्यत्र दौड़-धूप क्यों ? यह अपनी श्रद्धामूर्ति है। तुलसीदासजी ने श्रीकृष्ण की मूर्ति को प्रणाम नहीं किया। कहते हैं कि उनकी यह निष्ठा देखकर भगवान ने उन्हें रामचंद्रजी के रूप में दर्शन दिए।

ऐसी हमारी अविचल श्रद्धा हो। संघ के निर्देशित मार्ग से मैं निष्ठापूर्वक समाज-सेवा करूँगा - इस निश्चय से हमें काम में जुट जाना चाहिए। हमारी निष्ठा देखकर दूसरों में भी वह निष्ठा निर्मित होगी। धनहीन व्यक्ति दूसरे को क्या धन देगा ? जो वृत्तिशून्य है, वह कैसे निर्माण कर सकेगा ? अपना शरीर, मन, बुद्धि, सम्पत्ति सब कुछ संघ-समर्पित करने वाला अविचल बुद्धि का व्यक्ति ही नेता बन सकेगा। समाज के वैभवशाली रूप के लिए एकाग्र होकर परिश्रमपूर्वक संघ कार्य करना होगा। अन्यत्र दृष्टि भटकाने से नहीं चलेगा। हृदय को दूसरा विचार स्पर्श नहीं करना चाहिए। ऐसे अनुशासन से चलने वाले नेता हमें निर्माण करने हैं। *समाज के वैभवपूर्ण जीवन में मेरे संपूर्ण जीवन-समर्पण का स्थान रहना चाहिए और अपनी आँखों से मैं उसे देखूंगा, इस कठोर व्रत और संघमय वृत्ति से हम काम करें।* ■

आभिनंदन

वर्षाताई घरोटे को सम्मानित किया गया

वनवासी कल्याण आश्रम की प्रदेश महिला प्रमुख वर्षाताई घरोटे, दो दशक से भी अधिक समय से उत्तराखण्ड के रुद्रपुर में कार्यरत हैं। कई प्रकार की प्रतिकूलताओं के बीच बालिका शिक्षा एवं विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्य को आगे ले जाने में समर्थ वर्षाताई, महाराष्ट्र से आयी हैं परन्तु अपने स्नेहिल व्यवहार एवं कार्य कुशलता से सभी को अपना बना लिया है। कुछ समय पूर्व सामाजिक क्षेत्र में योगदान के लिए **पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय** की ओर से उन्हें सम्मानित किया गया। कल्याण आश्रम परिवार वर्षाताई का अभिनन्दन करता है।

शालु मित्रुका ने की MBA

वनवासी कल्याण आश्रम, पूर्णिया, बिहार की कार्यकर्ता शालु मित्रुका ने IIM Lucknow के दीक्षांत समारोह में MBA की डिग्री प्राप्त की है। शालु को ढेरों बधाई। ■

विक्रम संवत् का महत्त्व

- सुरेश चौधरी

सुर्याचंद्रम्सौधाता यथा पूर्वं कल्प्यत:
दिवंव पृथ्वीन्चान्त्रिक्ष्म द्योश्व: ।। 10/19/3

ऋग्वेद के दसवें मंडल के 19वें सूक्त में सृष्टि रचना के सम्बन्ध में बतलाया गया है की सृष्टि की रचना के तुरंत उपरांत नारायण ने संवत्सर की उत्पत्ति की, एवं संवत्सर के पहले दिन प्रथम सूर्योदय हुआ। शास्त्रों में यह विवरण भी है की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सृष्टि की रचना का प्रथम दिन था। चैत्र को मधु नाम से उल्लेखित किया गया है। पृथ्वी का प्रथम दिवस -इससे सुन्दर एवं पावन दिन और क्या हो सकता है? परमेश्वर ने ऋत अर्थात् संसार के नित्य शाश्वत नियमों के व्यवहारिक ज्ञान को उत्पन्न करके सत-रज-तम के संघात रूप में अत्यंत गतिमान, उद्वेलित, प्रकृति के समुद्र का निर्माण किया, फिर बनाया संवत्सर।

ज्योतिष शास्त्र में लिखा है "....चैत्र मासी जगद ब्रह्मा ससर्ज प्रथमे हानि... शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदय सती" अर्थात् चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन ब्रह्मा ने जगत की रचना की।

1947 तक हम अंग्रेजों की गुलामी झेलते रहे। हमारे संस्कारों पर उन्होंने आक्रमण कर हमें मानसिक रूप से गुलाम बनाया। सीमा एवं भौगोलिक स्वाधीनता तो हमने पा ली, परन्तु मानसिक गुलामी में हम अभी भी जकड़े हुए हैं एवं यह गुलामी कम होने के बजाय बढ़ रही है। चीन वाले अपना नव वर्ष धूमधाम से मनाते हैं, जापान वाले अपना एवं अन्य देश अपना-अपना, फिर हम क्यों अंग्रेजी नव वर्ष को सारी रात जागकर मदिरा पान कर बेहूदे तरीके से नाच कर मनाते हैं? पहले तो 1 जनवरी राष्ट्रीय अवकाश हुआ करता था, वह तो भला हो मोरारजी भाई का जिन्होंने पहली जनवरी काअवकाश हटा दिया।

सृष्टि की उत्पत्ति हुई इस दिन। कहते हैं श्री रामचंद्र का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ। आज के दिन ही युधिष्ठिर महाराज का भी राजतिलक हुआ। आर्यसमाज की स्थापना भी आज ही हुई। ईसा के 57 वर्ष पूर्व जब पाश्चात्य जगत संस्कृति एवं जीवनयापन की शैशवावस्था में था तब भारत पूर्ण रूपेण समृद्ध एवं परिपक्व था। चक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्य ने विश्व विजय प्राप्त की एवं उस दिन से यह नूतन वर्ष प्रारंभ हुआ।

संवत्सर का शाब्दिक अर्थ होता है ऋतुओं के एक चक्र का पूरा होना। अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ग्रीष्मऋतु का प्रारंभ होकर वर्ष का अंत वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर होते हुए बसंतऋतु पर होता है। कालिदास के प्रमुख काव्य ग्रन्थ ऋतुसंहार में भी यही क्रम रखा गया है।

भारतीय वैदिक युग में प्रत्येक कार्य अध्यात्मपरक होता था। वर्ष के प्रारंभ को ग्रीष्म से करने का भी तात्पर्य था। ग्रीष्म द्योतक है तप का- कोई भी कार्य का आरंभ करें तो तप की आवश्यकता है। वैसे ही बसंत द्योतक है धर्ममूलक काम का, अर्थात् काम पर विजय पाकर धर्म की स्थापना करना। वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर प्रतीक हैं, सत्य, दया, दान, और त्याग के।

भारतीय कालगणना के अनुसार वसंत ऋतु और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अति प्राचीनकाल से सृष्टि प्रक्रिया की भी पुण्य तिथि रही है। वसंत ऋतु में आने वाले वासंतिक नवरात्र का प्रारम्भ भी सदा इसी पुण्यतिथि से होता है। विक्रमादित्य ने भारत राष्ट्र की इन तमाम कालगणनापरक सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नवसंवत्सर संवत् को चलाने की परम्परा शुरू की थी और तभी से समूचा भारत राष्ट्र इस पुण्य तिथि का प्रतिवर्ष अभिवंदन करता है। दरअसल,भारतीय

परम्परा में चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य शौर्य,पराक्रम तथा प्रजाहितैषी कार्यों के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उन्होंने 95 शक राजाओं को पराजित करके भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। राजा विक्रमादित्य के पास एक ऐसी शक्तिशाली विशाल सेना थी जिससे विदेशी आक्रमणकारी सदा भयभीत रहते थे। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला संस्कृति को विक्रमादित्य ने विशेष प्रोत्साहन दिया था। धन्वंतरि जैसे महान वैद्य, वराहमिहिर जैसे महान ज्योतिषी और कालिदास जैसे महान साहित्यकार विक्रमादित्य की राज्यसभा के नवरत्नों में शोभा पाते थे। प्रजावत्सल नीतियों के फलस्वरूप ही विक्रमादित्य ने अपने राज्यकोष से धन देकर दीन दु:खियों को साहूकारों के कर्ज़ से मुक्त किया था। एक चक्रवर्ती सम्राट होने के बाद भी विक्रमादित्य राजसी ऐश्वर्य भोग को त्यागकर भूमि पर शयन करते थे।

विक्रम संवत् हिन्दू पंचांग में समय गणना की प्रणाली का नाम है। यह संवत 57 ईस्वी पूर्व आरम्भ होता है। बारह महीने का एक वर्ष और सात दिन का एक सप्ताह रखने का प्रचलन विक्रम संवत से ही शुरू हुआ। महीने का हिसाब सूर्य व चंद्रमा की गति पर रखा जाता है। यह बारह राशियाँ बारह सौर मास हैं। जिस दिन सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उसी दिन की संक्रांति होती है। पूर्णिमा के दिन,चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है, उसी आधार पर महीनों का नामकरण हुआ है। चंद्र वर्ष सौर वर्ष से 11 दिन 3 घड़ी 48 पल छोटा है। इसीलिए हर 3 वर्ष में 1 महीना जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार देखें तो समय की गणना का सर्वश्रेष्ठ एवं प्रमाणिक आधार विक्रम संवत् पंचांग है।

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम अपने नव वर्ष को उत्साह पूर्वक मनाएं। लोगों को मंगल कामनाएं दें, बधाईयाँ दें, ग्रीटिंग कार्ड भेजें, सामाजिक जीवन में इसे उत्सव का रूप देकर एक माहौल बनायें, अपने घरों में शुद्ध घी के दीपक को प्रज्ज्वलित कर नयी प्रभा प्रभासित करें। यह धारणा लोगों में पहुंचाएं कि हमारा नव वर्ष पहली जनवरी नहीं है बल्कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा है। ■

बेड़पा गाँव में भजन सत्संग कार्यक्रम

-अश्विन पटेल

दादरा नगर हवेली के श्रद्धा जागरण विभाग द्वारा सेलवास से 42 कि. मी. दूर बेड़पा गाँव के जामन विहीरी में भजन-सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 5 जनवरी 2016 को आयोजित भजन-सत्संग के इस कार्यक्रम में 350 से अधिक वनवासी महिला-पुरुष सम्मिलित हुए। ग्रामीण युवकों द्वारा एक के बाद एक भजन गाये गए और सारा वातावरण भक्तिमय बन गया।

बेड़पा गाँव के भजन-सत्संग में सह-क्षेत्र संगठन मंत्री अश्विनभाई पटेल विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि अपनी परम्परागत श्रद्धा का जतन कर वनवासी समाज गाँव-गाँव में जीवन यापन कर रहा है। भजन-सत्संग, विविध प्रकार की पूजा, यज्ञ आदि कार्यक्रमों के माध्यम से वनवासी समाज सनातन धर्म के साथ किस प्रकार जुड़ा है, इसका परिचय कराता है। प्रांत श्रद्धाजागरण प्रमुख सुभाष घोड़ी, खानवेल से आए एम एन बाबु, बेड़पा गाँव के रघुभाई और अन्य कई कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सफल करने के लिए सघन प्रयास किया। ■

अमृतवचन

जिनके अंदर अय्याशी, फिजूलखर्ची और विलासिता की कुर्बानी देने की हिम्मत नहीं, वे अध्यात्म से कोसों दूर हैं। -विनोबा भावे

अभिमान एक ऐसा चक्रव्यूह है, जिसमें फंस जाने के बाद पुनः बाहर निकलना बहुत कठिन होता है। - आचार्य महाश्रमण

वनबंधु के सरोकारों से जुड़ने का अभियान : मकर संक्रान्ति

-शशि अग्रवाल, सहमंत्री, महानगर महिला समिति

भारत देश उत्तरी गोलार्ध में स्थित है। मकर संक्रान्ति से पहले सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में होता है अर्थात् भारत से अपेक्षाकृत अधिक दूर होता है। इसी कारण यहाँ पर रातें बड़ी एवं दिन छोटे होते हैं तथा सर्दी का मौसम होता है। किन्तु मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध की ओर आना शुरू हो जाता है। अतएव इस दिन से रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं तथा गरमी का मौसम शुरू हो जाता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा तथा रात्रि छोटी होने से अन्धकार कम होगा। अत: मकर संक्रान्ति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तभी इस पर्व को मनाया जाता है। सूर्य पर आधारित यह त्यौहार भी सूर्य कलेंडर की निश्चित तिथि पर ही होता है जो कि जनवरी माह के चौदहवें या पन्द्रहवें दिन ही पड़ती है, इसी दिन सूर्य धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है। मकर संक्रान्ति के दिन से ही सूर्य की उत्तरायण गति भी प्रारम्भ होती है।

मकर संक्रांति पर दान धर्म का विशिष्ट महत्व है। शास्त्रों में भी लिखा है-

माघे मासे महादेव: यो दास्यति घृतकम्बलम्।
स भुक्त्वा सकलान् भोगान् अन्ते मोक्षं प्राप्यति?

माघ मास के इस दिन घी, कम्बल का दान देने से मोक्ष की प्राप्ति होती है, इसी परंपरा को मूर्त रूप देते हुए वनवासी कल्याम आश्रम देश भर में इस पावन दिन पर दान की सामग्री एवं धन एकत्रित कर वनवासी बंधुओं को जीने का सहारा देता है। कोलकाता हावड़ा महानगर ने इस पर्व विशेष को अपने कार्य में महा अभियान के रुप में अपनाया है। हमने समाज की इस प्रवृत्ति को कल्याण आश्रम के कार्य का आधार बनाया। पूरे कोलकाता और हावड़ा महानगर में विभिन्न स्थानों पर सार्वजनिक कैंप लगा कर समाज की इस मानसिकता में अपने वनवासी बन्धुओं को भी सम्मिलित कर लिया। वनक्षेत्रों में वनबन्धु कैसा जीवन यापन कर रहे हैं और गत 63 वर्षों से कल्याण आश्रम उनके बीच रहकर क्या कार्य कर रहा है इससे समाज को अवगत कराया। समाज को राष्ट्र-हित और राष्ट्रीय कर्तव्य की ओर मोड़ने का प्रयास किया। हमने समाज के सहयोग से इसमें आशातीत सफलता भी पाई। इस वर्ष पूरे कोलकाता-हावड़ा महानगर में कुल 73 कैम्प लगे और कई मोबाइल कैम्प (15 के लगभग) चलाये गये। लेकटाउन महिला समिति ने 12 कैम्प लगाकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इन कैम्पों की तैयारी कार्यकर्ता करीब एक महीने पहले से ही करने लगते हैं। संक्रान्ति के सप्ताह भर पहले से घर-घर जाकर पत्रक वितरण करना और स्थानीय लोगों को कैम्प की सूचना देने का कार्य शुरु हो जाता है। संक्रान्ति के दिन सुबह 7 बजे से कैम्प का विधिवत् उद्घाटन कर संग्रह अभियान शुरु हो जाता है।

कुल 73 कैम्पों का नगरश: ब्यौरा :

पूर्व नगर	6 कैम्प
उत्तरपूर्व नगर	32 कैम्प
उत्तर नगर	5 कैम्प
पश्चिम नगर	8 कैम्प
मध्यनगर	4 कैम्प
दक्षिण नगर	8 कैम्प
मध्य हावड़ा	3 कैम्प
उत्तर हावड़ा	3 कैम्प
रिसड़ा	1 कैम्प
हिन्द मोटर	1 कैम्प
दक्षिण हावड़ा	2 कैम्प
चल शिविर (मोबाइल)	15 कैम्प

इन कैम्पों में कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता ही नहीं बल्कि कैम्प के आस-पास रहने वाले स्थानीय बन्धु भगिनी का विशेष सहयोग रहता है। कई कैम्प तो ऐसे

है जहां स्थानीय लोग ही कैम्प लगाने का प्रयास करते है। इस बार एक ऐसा ही अनुभव आया। VIP Road पर स्थित ऐलकोव ग्लेरिया के अभिषेक पोद्दार ने स्वयं फोन करके आग्रह किया कि वह यहाँ कैम्प लगाना चाहते हैं (कैम्प के विषय में पहले से ही अवगत थे) और लेकटाउन महिला समिति और उनके प्रयास से ऐलकोव ग्लोरिया में कैम्प का सफल प्रयास हुआ। न सिर्फ अच्छी धनराशि और वस्तु संग्रह ही हुआ बल्कि कॉम्पलेक्स के सभी लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और कल्याण आश्रम के इस कार्य से अति प्रभावित हुए और भविष्य में और अधिक सहयोग करने का आश्वासन भी दिया।

इसी प्रकार एक अनुभव और है। हावड़ा के गोपालराम जी अपने सहयोगी के साथ परिवार सम्पर्क के दौरान एक परिवार में संग्रह हेतु गये तो राजेशजी जिन्दल ने क.आ. के बारे में सुनकर कहा कि समाज में दो ही संस्था कार्य कर रही हैं पहली कल्याण आश्रम और दूसरी इस्कॉन। उन्होंने स्वेच्छा से 11,000 की धनराशि दी और कहा कि भविष्य में भी कोई आवश्यकता होने पर उनसे सम्पर्क करें।

ऐसे उदाहरणों की लम्बी सूची है। गंगेज गार्डेन्स में स्थानीय महिला समिति है जिसने स्वप्रेरणा से 150 लालटेन इकट्ठा करके दी और उसे जलाने के लिये तेल के लिए 11,000 की राशि अलग से दी। कालिन्दी वाटिका के निकट कैम्प लगाया और वहाँ रहने वाली श्रीमती सुनीता सिंघी ने अपनी किटी ग्रुप से एक जलाशय निर्माण के लिए 25,000 की धनराशि एकत्र करके दी जो सचमुच सरहानीय है।

जोड़ामंदिर महिला समिति ने विभिन्न स्थानों पर कैम्प लगाये और इस कार्य से प्रभावित होकर कई महिलायें अब नियमित बैठकों में आकर अपने कल्याण आश्रम परिवार का हिस्सा बन गयीं, जिनमें श्रीमती रीना अग्रवाल, श्रीमती कान्ता खेतावत, श्रीमती अल्पना नेवटिया, श्रीमती अनीता अग्रवाल आदि प्रमुख नाम हैं। इस महा अभियान में सभी कार्यकर्ताओं ने उस दिन अपने कार्य से अवकाश लेकर पूरा समय इस पावन कार्य को समर्पित किया। सैकड़ों लोगों के समर्पण और सहयोग से यह महा अभियान सफल रहा और प्रचुर मात्रा में धन-राशि और वस्तुएं इकट्ठी हुई जो वनवासी बन्धुओं के सर्वतोमुखी विकास हेतु काम आयेगी। लगभग 8 हजार दानदाताओं का सहयोग मिला मगर कल्याण आश्रम के कार्य के विस्तार एवं आवश्यकता को देखते हुए इसमें निरन्तर प्रगति करने का संकल्प लेते हुए आगामी वर्ष इस लक्ष्य को और आगे ले जाना है।

संक्षेप में **''मकर संक्रान्ति-सम्यक् क्रान्ति"**, कल्याण आश्रम की इस भाव धारा को सही अर्थों में कार्यकर्ताओं ने चरितार्थ किया है। 25 वर्ष पूर्व मात्र एक कैम्प से शुरु हुआ यह महा अभियान आगामी वर्ष 101 की संख्या पार करे ऐसा शुभ संकल्प है। ■

वनभोज सम्पन्न

गत 31 जनवरी को मध्यमग्राम के चोपड़ा गेस्ट हाउस में कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं का वनभोज कार्यक्रम अत्यन्त उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यकर्ताओं के अलावा बड़ी मात्रा में अतिथिगण एवं कार्यकर्ताओं के परिवार के लोग उपस्थित थे। विभिन्न प्रकार के खेल-कूद, मनोरंजक स्पर्धायें एवं लजीज भोजन इस वनभोज का वैशिष्ट्य रहा। लगभग 140 कार्यकर्ता बंधु-भगिनी उपस्थित थे। ■

वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा सिंहस्थ कुम्भ महापर्व उज्जैन में विशाल शिविर

उज्जैन में आगामी 22 अप्रैल से 21 मई 2016 सिंहस्थ कुम्भ महापर्व है। इस अवसर पर वनवासी कल्याण आश्रम 2 लाख वर्ग फीट की जगह में एक विशाल शिविर लगा रहा है। सम्पूर्ण भारत के विभिन्न गाँवों से वनवासी समाज को कुम्भ स्नान तथा दर्शन कराने की योजना बनी है। लगभग 2000 वनवासी बंधु/भगिनि प्रत्येक दिन वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से उज्जैन आयेगें तथा कुम्भ महापर्व का लाभ लेगें।

36वें वार्षिकोत्सव में जागरण नाटक की भावपूर्ण प्रस्तुति

- सीमा रस्तोगी, मंत्री, महानगर महिला समिति

मंचासीन विशिष्ट अधिकारी वृन्द

आज नारी किस हाशिये पर खड़ी है, खास कर वनवासी क्षेत्र में, एक तो शिक्षा का अभाव दूसरा कुरीतियाँ, नारियों पर या नारियों के नाम पर शोषण हो रहा है। भारतीय वनवासी नारियों के परिप्रेक्ष्य में रचित यह नाटक बतलाता है वनवासी कल्याण आश्रम की गतिविधियाँ। कल्याण आश्रम ने वनक्षेत्र की नारियों के समुचित उत्थान का संकल्प लिया हुआ है, आये दिन हम देखते हैं नारियों का शोषण दहेज के लिए किया जाता है, कभी जादू टोना के चक्कर में चुड़ैल बता कर उनकी हत्या कर दी जाती है, कभी इन युवा बालिकाओं को फुसला कर दूर देशों में बेच दिया जाता है तो कभी यह जननी संतति के अभाव में प्रताड़ित कर घर से निकाल दी जाती है, इन मुख्य चार समस्याओं को लेकर विभिन्न राज्यों की पृष्ठभूमि पर रचित ये लघु नाटक, जिसे कल्याण आश्रम के ही बालकों ने अभिनीत किया, सत्य घटनाओं पर आधारित यह नाटक कल्याण आश्रम के कार्य की एक झलक भी है, आज कल्याण आश्रम इन सभी कुरीतियों एवं अशिक्षा को दूर कर एक नवीन भारत का निर्माण करना चाहता है जिसमें वनवासी नारियों का प्रमुख योगदान हो। शिक्षा ही हमें नयी रोशनी दे सकती है यह इस नाटक का मुख्य उद्देश्य है, जिसके निर्देशक श्री राजकुमार जैन और सहयोगी श्री शिव जायसवाल थे एवं लेखक श्री सुरेश चौधरी जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से वनवासी अंचल की छोटी-छोटी घटनाओं को मूर्त रुप दिया था। बीच-बीच में हमारे पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं-वीणापाणी दास, मालती सोरेन, रेवती दी, सुशील सोरेन आदि का साक्षात्कार एवं घटनाओं का सजीव विवरण चलता रहा जिसे सभी ने सराहा।

अध्यक्ष का आसन सुविख्यात उद्योगपति एवं समर्पित गोभक्त श्री दीनदयाल जी गुप्ता ने ग्रहण किया। मुख्य अतिथि पद को सुशोभित किया सुप्रतिष्ठित उद्यमी एवं सेवाभावी श्री मोहनलाल जी बजाज ने। प्रधान वक्ता के रुप में हम सबका मार्गदर्शन किया वनवासी कल्याण आश्रम की अखिल भारतीय सह महिला प्रमुख श्रीमती रंजना करंदीकर जी ने। कार्यक्रम का सफल संचालन सुश्री सुप्रिया बैद ने किया। मानिकतल्ला समिति की बांग्लाभाषी बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर कल्याण भारती के नारी विशेषांक का लोकार्पण प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रंजीत भट्टाचार्य के कर-कमलों से हुआ। श्रीमती शशी मोदी (सह संगठन मंत्री) ने वंदे मातरम् गीत प्रस्तुत किया। ■

जागरण नाटक के भावपूर्ण दृश्य

भारतीय राष्ट्रीय पंचांग या "भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर"

भारत में उपयोग में आने वाला सरकारी सिविल कैलेंडर शक संवत् पर आधारित है जिसे 22 मार्च 1957 से अपनाया गया। भारत में यह भारत के राजपत्र, आकाशवाणी द्वारा प्रसारित समाचार और भारत सरकार द्वारा जारी संचार विज्ञप्तियों में ग्रेगेरियन कैलेंडर के साथ प्रयोग किया जाता है। इस सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी कल्याण भारती के अगले अंक में दी जाएगी।

सप्तदिवसीय चिकित्सा शिविर का विराट आयोजन

- शैलजा बियानी, सेवापात्र प्रमुख

कल्याण आश्रम के महानगरीय कार्य में चिकित्सा शिविर का नियमित आयोजन किया जाता है। परन्तु इस वर्ष 3 फरवरी से 10 फरवरी तक पश्चिम बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों में मेगा हेल्थ कैम्प लगाने की परिकल्पना की गई ताकि एक साथ बड़े पैमाने पर वनवासी बन्धुओं का स्वास्थ्य परीक्षण हो सके। हमारे कई नगरीय एवं ग्रामीण कार्यकर्ताओं के सामूहिक प्रयत्नों से यह अविश्वसनीय एवं कठिन कार्य सम्पन्न हो सका।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बद्ध नेशनल मेडिकोज ओरगेनाइजेसन (NMO) की पश्चिम बंगाल इकाई के सहयोग से इस विराट कैम्प का आयोजन किया गया। NMO के सहयोग से कई डॉक्टरों का प्रत्यक्ष सहयोग मिला। पश्चिम बंगाल को चार क्षेत्रों में विभाजित कर सुन्दरवन, मल्लारपुर, वीरभूम, दुर्गापुर, बागमुण्डी, झालदा, पुरुलिया, झिलिमिली, बेलपहाड़ी, तथा खड़गपुर में कोलकाता से 4 टीम रवाना हुई और प्रतिदिन एक नये गाँव में 7 दिनों तक लगातार कैम्प लगाये गये। डॉक्टरों की टीम में 4 लन्दन से, 7 नागपुर से तथा कोलकाता मेडिकल कॉलेज के अनेक डॉक्टर एव इन्टर्न्स एवं छात्रों का सहयोग प्राप्त हुआ। रात्रि भोजन तथा विश्राम की भी उत्तम व्यवस्था थी। दोपहर का भोजन गाँव में ही किसी कार्यकर्ता के घर पर होता था। ग्रामवासी से चर्चा, वार्तालाप एवं अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद सभी ने उठाया। कुल 24 कैम्प लगाये गये। 250 ग्राम लाभान्वित हुए। सुबह 10 बजे से सायं 5 बजे तक प्रतिदिन कैम्प लगे। पूरा कार्य अति व्यवस्थित तरीके से हुआ। दवा वितरण, चक्षु परीक्षण एवं चश्मा वितरण भी किये गये। 500 से अधिक ग्रामीण कार्यकर्ता तथा लगभग 100 शहरी बन्धुओं का सहयोग प्राप्त हुआ। लगभग 7 हजार वनवासी परिवार चिकित्सा सेवाओं से लाभान्वित हुए। करीब 8,00,000 रुपये की दवाईयाँ शहर से भेजी गई। दवाईयों की उत्तम पैकिग और लिस्टिंग कल्याण भवन में 3-4 दिनों तक की गई। सभी डॉक्टरों का सेवाभाव और समर्पण भाव काबिले-तारीफ था।

कैम्प से लौटकर आने के बाद यहाँ एम.पी. बिरला फाउन्डेशन में निरंतर वनबन्धुओं के चक्षु ऑपरेशन हो रहे हैं। इनमें केवल मोतियाबिंद (Cataract) ही नहीं, Cornea Replacement के operation भी कराये जा रहे हैं। जिनकी आँखों के पावर नोट किये जा रहे थे, उन सभी वनवासी बन्धुओं के चश्मे उस क्षेत्र में भिजवाये जा रहे हैं। जिन वनवासी भाइयों का इलाज लंबा चलता है, उन्हें कल्याण भवन में ठहरा कर उनकी देख रेख चलती है। यह सब इसीलिए संभव है क्योंकि हमारे कार्यकर्ता इस कार्य को ईश्वरीय कार्य समझ कर करते हैं। रात और दिन केवल उनके विकास का ही चिंतन रहता है।

इस मेडिकल कैम्प में वनयात्रा जैसा आभास हुआ। भविष्य में भी ऐसे कैम्प होते रहेंगे, अधिकाधिक वनवासी बन्धु इनसे लाभान्वित होंगे और शहरी बन्धु वनवासियों से संवेदनात्मक रुप से जुड़े रहेंगे, ऐसी प्रार्थना प्रभु से है। ■

बालीगंज समिति की बहनों के अनुभव के स्वर

-सुधा सौन्थलिया

3 फरवरी को बालीगंज समिति की 8 कार्यकर्ता बहनें महेशजी मोदी और राजेशजी अग्रवाल के नेतृत्व में सुन्दरवन के समीप सोनाखाली के मेडिकल कैम्प में गई। पहुंचते ही सभी बहनें कैम्प में सहायता करने लग गई। बहुत कुशलतापूर्वक वहाँ का कार्य संभाला। उनका अनुभव था कि इस तरह का मेडिकल कैम्प हमने पहले कभी नहीं देखा है। उन्हें यह जानकर हर्ष हुआ कि सभी समुदाय के रोगियों का इलाज किया जा रहा है। आगे भी वे इस तरह के कैम्प में जाने को इच्छुक हैं। उल्लेखनीय है कि बालीगंज समिति का गठन अभी 6 मास पूर्व ही हुआ है किन्तु समिति की सभी बहनें संगठन की सभी गतिविधियों में उल्लासपूर्वक भाग लेती हैं। ■

सप्तम् राष्ट्रीय वनवासी क्रीड़ा महोत्सव का सफल आयोजन

सप्तम् राष्ट्रीय वनवासी क्रीड़ा महोत्सव का होटवार के बिरसा मुंडा एथलेटिक्स स्टेडियम में 27 दिसम्बर 2015, रविवार को रंगारंग आगाज हुआ। पूरे देश भर से तीन हजार दो सौ आदिवासी खिलाड़ियों ने इस महोत्सव में भाग लिया। क्रीड़ा महोत्सव शुरु करने की घोषणा मुख्यमंत्री रघुवर दास ने की। पूरे राज्य से 33 हजार से ऊपर आदिवासी उद्घाटन समारोह में आए हुए थे। इस अवसर पर अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष जगदेव राम उरांव, पर्वतारोही अंशु जेंसेंपा, अंतरराष्ट्रीय धाविका कविता राउत, जनजातीय विभाग के केंद्रीय मंत्री जुएल उराँव, संघ के सरकार्यवाह भैयाजी जोशी ने संबोधित किया। भैयाजी जोशी ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि आदिवासी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सुदूर अंचलों में रहने वाले आदिवासियों के लिए बेहतर शिक्षा, एवं स्वास्थ्य की सुविधा होनी चाहिए। सरकार को भी इस दिशा में पहल करनी चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय धाविका कविता राउत ने कहा कि मैं आज जो भी हूं, वनवासी कल्याण आश्रम की वजह से हूँ। हम आदिवासी किसी से पीछे नहीं हैं। हर क्षेत्र में आगे हैं। बस, हमें कठिन परिश्रम से परहेज नहीं करना चाहिए। आगे बढ़ने के लिए मेहनत करें। इसी से हम आगे बढ़ेंगे। एवरेस्ट फतह करने वाली आदिवासी अंशु जेन्सेंपा ने अपने अनुभव को साझा करते हुए खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। कहा, आप को यहां देखने के लिए हजारों लोग आए हैं। हम पर्वतारोहियों को देखने वाला कोई नहीं होता है। एवरेस्ट पर चढ़ाई करना काफी कठिन है और इसके सामान भी कीमती होते हैं। थोड़ी सी लापरवाही जानलेवा हो सकती है। खिलाड़ियों से कहा कि खिलाड़ी भी सोशल चेंज ला सकते हैं। जैसे सोने को तपना पड़ता है, हीरे को रगड़ का सामना करना पड़ता है, वैसे ही खिलाड़ी को भी परिश्रम करना पड़ेगा। खेल महोत्सव का आरंभ वैदिक मंत्रों से हुआ। पं- श्याम भारद्वाज की टीम ने वैदिक मंत्रोच्चार किया। इसके पूर्व दीप जलाया गया। भारत माता, प्रभु श्री राम व संस्थापक अध्यक्ष देशपांडे जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। केंद्रीय मंत्री जुएल उराँव ने खेल झंडे को फहराया। इसके बाद नमिता सिन्हा की टीम ने स्वागत गान पेश किया। डॉ- एच.पी. नारायण ने अतिथियों का परिचय कराया और सज्जन सर्राफ ने स्वागत किया इस मौके पर श्रद्धा पत्रिका का विमोचन अतिथियों ने किया। श्रद्धा का अंक खेल पर केंद्रित है।

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष जगदेव राम उराँव ने कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी एवं कल्याण आश्रम के बारे में विस्तार से बताया। आदिवासी के अधिकारों की चर्चा की। कहा कि इस खेल का उद्देश्य सुदूर जंगलों में छिपी प्रतिभा को सामने लाना है। आदिवासी खेल में माहिर होते हैं। उनको उचित प्रशिक्षण की जरुरत होती है। वनवासी कल्याण आश्रम यह काम करता है। केन्द्रीय जनजातीय कार्य मंत्री जुएल उराँव ने कहा है कि राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करने वाले वनवासी खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति दी जाएगी। उन्होंने कहा कि जल्द ही इस संबंध में निर्णय लिया जाएगा। ऐसे में उन्हें भी अन्य खिलाड़ियों की तरह मदद मिलनी चाहिए ताकि वे अपना प्रदर्शन सुधार सकें। दस हजार कि.मी. दूर लिथुआनिया से आई मशहूर गायिका वेत्रा ने वंदेमातरम गाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। लिथुआनिया में भी धरती को मां कहते हैं। कहा जाता है, यहां के लोग मूल रुप से भारत के हैं। यहीं से हजारों साल पहले गए हैं। वहाँ की परंपराओं-शादी-ब्याह में भी यहाँ की झलक

दिखाई पड़ती है। मंत्र भी संस्कृत में बोले जाते हैं। वहाँ की भाषा संस्कृत के निकट है। स्वस्तिक भी इनका प्रतीक है। वेत्रा रोमेव जनजाति की हैं। वे स्वयं को राजपूत बताती हैं। उनकी माता इंजा वहां गुरुमाता कही जाती हैं। वेत्रा की मां भी अपनी पारंपरिक वेशभूषा में थी। एकमात्र वाद्य कन्कलेस के साथ वेत्रा ने वंदेमातरम् गाया। खेलगाँव में भारतीय संस्कृति का हर रंग दिखा। झारखंड का छउ, मणिपुर का बिजू और त्रिपुरा के रियाग, गुजरात के डांडिया नृत्य ने हजारों की भीड़ को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस महोत्सव की खास बात यह थी कि इसमें नेपाल के खिलाड़ियों ने भी हिस्सा लिया। नेपाल में भी थारु, उराँव और संथाल जनजातियां रहती हैं। इस महोत्सव में बांग्लादेश व भूटान को भी आमंत्रित किया गया था। किसी कारणवश् वहाँ के खिलाड़ी शामिल नहीं हो पाये।

राँची में आयोजित सप्तम राष्ट्रीय वनवासी क्रीड़ा प्रतियोगिता में दक्षिण बंगाल प्रांत ने 6 स्वर्ण, 2 रजत तथा 3 कांस्य पदक हासिल किये।

स्वर्ण पदक विजयी खिलाड़ी

- सुश्री छबि सिंह, मेदिनीपुर -100 मीटर रेस जूनियर
- सुश्री सबीता माझी, पुरुलिया पश्चिम -100 मीटर रेस सीनियर
- सुश्री आशा मुंडारी, नदिया शॉटपुट जूनियर
- श्री संतोष सरदार, उत्तर 24 परगना -साईकिल रेस
- श्री राकेश राय, नदिया लॉङ्ग जम्प सीनियर
- श्रीमती सीतामणी सरेन, मेदिनीपुर पश्चिम -म्युजिकल चेयर

कुल मिलाकर खेल महोत्सव ने वनवासी खिलाड़ियों की अद्‌भुत प्रतिभा एवं ऊर्जा से विराट समाज को रुबरु कराया। हम कामना करते हैं कि -

लुप्त न हो जाए यह प्रतिभा, गुप्त न इनका नाम रहे,
विश्व धरा पर दौड़ें, जीतें, देश में सम्यक स्थान मिले।।■

शोक संवाद...

वीरमाता सुमित्रा देवी का निधन

हुतात्मा श्री राम शरद कोठारी की जननी वीरमाता सुमित्रा देवी, जिनका यथार्थ जीवन ही अपने आप में मार्मिकता,ममत्व और बलिदान की सच्ची भावना से परिपूर्ण था, गत 26 जनवरी सोमवार को ब्रह्मलीन हो गयीं। दिनांक 01 फरवरी 2016 को ओसवाल भवन में वीरमाता की पुण्य स्मृति में "राम शरद कोठारी स्मृति संघ के तत्वावधान में पंचखंड पीठाधीश्वर आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महाराज की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। आचार्य जी के मुखारविंद से अपनी यशस्वी शिष्या सुमित्रा जी की श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित होना और उनकी वीरगाथाओं का वर्णन सबको भाव-विभोर कर गया। आचार्य जी ने विश्वास के साथ संकल्पित शब्दों में कहा की अयोध्या में राम मंदिर का भव्य निर्माण अति शीघ्र होगा। जिसमें राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मधु भाई कुलकर्णी, विहिप के अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष चम्पत राय जी, सुपुत्री पूर्णिमा कोठारी, बीजेपी पश्चिम बंगाल अध्यक्ष दिलीप घोष,माननीय सुनील दा,सीताराम जी अग्रवाल, वरिष्ठ पत्रकार, मंच संचालक राजेश जी अग्रवाल आदि अनेक गणमान्य जनों की उपस्थिति में सेवाभारती, पूर्वांचल कल्याण आश्रम, वनबन्धु परिषद्, नागौर नागरिक परिषद्, बजरंग दल, संस्कार भारती, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, अखिल भारतीय गौरक्षा दल, श्री गौसेवा परिवार, कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, श्री श्याम साधना मंडल समेत संघ की अनेक अनुषांगिक संगठनों की तरफ से वीरमाता को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि दी गयी। वनवासी सेवा एवं संगठन कार्यों तथा संगठन के कार्यकर्ताओं के प्रति आपका सदैव आत्मीयतापूर्ण सहयोग रहा। कल्याण आश्रम परिवार की ओर से वीरमाता को पुनः पुनः भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन। ■

रानी गाईदिन्ल्यू की गाथा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा : स्मृति ईरानी

स्वतंत्रता आंदोलन के समय अपनी 13 वर्ष की आयु में रानी माँ गाईदिन्ल्यु का जो योगदान रहा है, वह उनके विलक्षण व्यक्तित्व का परिचायक है और स्वतंत्रता के पश्चात् का आंदोलन भी उनकी अनूठी वीरता और समर्पण का उदाहरण है। केन्द्रीय मानव संसाधन विभाग उनके जीवन के सन्दर्भ में शोध करेगा और नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से उसे देश की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित करे, ऐसा प्रयास मैं करुंगी। उनकी जीवन गाथा पाठ्यक्रम में शामिल होनी चाहिए। **यह विचार स्मृति ईरानी (केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार) ने दिल्ली में वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित रानी माँ गाईदिन्ल्यू जन्मशती समारोह के समय व्यक्त किये।** दिनांक 24 जनवरी 2016 को दिल्ली के मावलंकर सभागृह में कार्यक्रम के प्रारम्भ में नागालैण्ड से विशेष रुप में आई तासिले जेलियांग के शुभ हाथों से भारतमाता के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात नरेला छात्रावास के बालकों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में नागालैण्ड के मुख्यमंत्री श्रीमान टी. आर. जेलियांग भी पधारे थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि पूर्वोत्तर राज्य देश की मुख्यधारा से सांस्कृतिक और भावनात्मक रुप से जुड़े हैं और हम उसके लिये काम करते रहेंगे। वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगदेवराम उरांव जी इस समारोह के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने कहा कि परम्परा और संस्कृति का अस्तित्व और उसकी अस्मिता के लिए हमें कार्य करना है। रानी माँ के जीवन का स्मरण कराते हुए उन्होंने कहा कि उनकी जन्मशती निमित्त देश भर में 45 से अधिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सभागृह पूर्ण रुप से भरा हुआ था-जो कार्यकर्ता, सहयोगी तथा निमंत्रितों का उत्साह प्रदर्शित करता था। कल्याण आश्रम के आमंत्रण पर पत्रकार बन्धु भी बड़ी संख्या में पधारे थे। ■

अनुकरणीय

- तारा माहेश्वरी

- हिन्दमोटर महिला समिति की श्रीमती देवकी खंडेलिया ने पौत्री होने की खुशी में वनवासी बालिकाओं की शिक्षा हेतु मकर संक्राति के पावन दिवस पर 31,000 की राशि प्रदान कर माननीय प्रधानमंत्री जी के *बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ* आंदोलन को गति प्रदान की है। साधुवाद्!
- पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थानों पर गत 3 फरवरी से 10 फरवरी तक विराट पैमाने पर मेडिकल कैम्प लगाने की योजना को मूर्त रूप देने के लिए विपुल मात्रा में अर्थ की आवश्यकता थी। कार्यकर्ताओं को स्वाभाविक चिन्ता थी कि इस विराट कार्य के लिए किस प्रकार समाज बन्धुओं से सहयोग मांगा जाये? जब हमारे आत्मीय सहयोगी विश्वनाथ सेक्सरिया जी को इस योजना की जानकारी मिली तो उन्होंने स्वयं कार्यकर्ताओं को बुलाकर आश्वस्त किया कि पवित्र प्रेरणा से किये गये सेवा कार्यों के लिए साधन का अभाव कभी नहीं हो सकता। उन्होंने CSR के तहत तत्काल 12 लाख की राशि इस विराट कैम्प के लिए प्रदान की। ज्ञातव्य है कि विश्वनाथ जी प्रतिवर्ष वनवासी प्रकल्पों हेतु नियमित रुप से बड़ी राशि प्रदान करते हैं। इस बार मेडिकल कैम्प के लिए आपने अतिरिक्त अनुदान देकर कार्यकर्ताओं के उत्साह को शतगुणित कर दिया है। कल्याण आश्रम परिवार संवेदना के धनी विश्वनाथ जी के लिए आंतरिक हर्ष एवं गौरव का अनुभव कर रहा है।
- अपनी दिवंगत बहन भावना गुप्ता की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु उनके भ्राता श्री आनंद गुप्ता ने एक वनवासी छात्र की शिक्षा का व्यय वहन कर सचमुच अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। कल्याण आश्रम परिवार उनकी स्वर्गीय बहन को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की चिर शांति की कामना करता है। ■

बोधकथा .....

सबसे सुखी

उत्तरी अफ्रीका में एक राजा था। उसके पास सब कुछ था। सोना-चांदी, पत्नी-बच्चे, नौकर-चाकर लेकिन वह सुखी नहीं था। वह समझ नहीं पाता था कि कैसे खुश रहा जाए? एक दिन वह नौकरों पर ही चिल्ला पड़ा, "मैं खुश क्यों नहीं रहता हूं? मुझे खुशी पाने के लिए क्या करना चाहिए?" एक नौकर ने कहा, "आकाश में चांद और तारे कितने सुंदर दिखते हैं। आप उन्हें देखेंगे तो लगेगा कि जिंदगी कितनी अच्छी है !" राजा गुस्से में बोला, "मैं उन्हें देखता हूं तो मुझे और गुस्सा आता है। मैं उन्हें पा नहीं सकता इसलिए।" दूसरे नौकर ने कहा, "संगीत मनुष्य को सुख देता है। आप संगीत सुना कीजिये।" राजा ने इसे नकार दिया। एक अन्य नौकर बोला, "हुजूर पहले आपको एक ऐसा आदमी ढूंढ़ना चाहिए जो खूब सुखी हो। उस आदमी की कमीज उतारकर अगर आप पहन लेंगे तो सुख अपने-आप आपके शरीर के अंदर चला जाएगा।" राजा को यह सलाह पसंद आई। उसने अपने सिपाहियों को सुखी आदमी की तलाश में भेज दिया। सिपाही भटकते रहे, पर वैसा आदमी मिला ही नहीं। एक दिन छोटे से गाँव के एक आदमी ने दावा किया कि वह दुनिया का सबसे सुखी आदमी है। सिपाही उसे राजा के पास ले आए। राजा ने तुरंत उसे अंदर बुलाया। दरवाजा खुलते ही एक ठिगना-सा आदमी मुस्कराते हुए अंदर आया। राजा ने उसका स्वागत करते हुए कहा, "इधर आओ मेरे दोस्त! अपनी कमीज उतारकर मुझे दे दो!" ठिगना आदमी राजा के पास आया। राजा ने उसकी ओर देखा तो आश्चर्य से देखता रह गया। दुनिया के उस सबसे सुखी आदमी ने कोई कमीज ही नहीं पहन रखी थी। ■

कविता .....

पं. दीनदयाल उपाध्याय की जन्मशती पर विशेष

- डॉ. शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

हे ज्योति पुरुष ! संगठन प्राण
लो जन्मशती पर शत प्रणाम !
शत-शत प्रणाम ! शत-शत प्रणाम !!

था राजनीति का घोर पंक, तुमने फूंका जागरण शंख !
"एकात्म" मंत्र का नव दर्शन, तरुणाई को लग गए पंख !!
तुमने सिखलाया था हर क्षण, यह राष्ट्र नहीं केवल रज कण
भूखंड नदी पर्वत परिजन, इसमें चिति का नित स्पन्दन
राष्ट्रात्मा के शोधक महान ! लो जन्मशती पर शत प्रणाम !
शत शत प्रणाम !!

तुमने दी नई दिशा सबको है,काम्य न केवल अर्थ, काम
तज धर्म, कर्म बनता विनाश, यदि मोक्ष नहीं कैसा विकास
आराध्य न केवल दिव्य, भव्य, वंचित, शोषित, पीड़ित प्रणम्य !
जब तक भूखा है आसपास, तब तक विरूप वैभव, विलास
हे पूर्ण दृष्टि चिन्तन ललाम,लो जन्मशती पर शत प्रणाम !
शत-शत प्रणाम !!

है मनुज न केवल पेट, हाथ,उसके भीतर है हृदय, माथ
धन का अभाव भीषण संकट,धन का प्रभाव भी महाविकट
जब तक आंखें गीली उदास, है लगी खेत को कहीं प्यास
जब तक खाली है हाथ कहीं, तब तक विकास का अर्थ नहीं
चिति के शोधक, चिति के साधक, लो जन्मशती पर शत प्रणाम !
शत-शत प्रणाम !!

जो दीप जलाया था तुमने,उसके प्रकाश में खिला कमल
जो मार्ग दिखाया था तुमने, चलना है उस पर सदा अटल
है सही दिशा है सही नीति,निश्चय ही होंगे सदा सफल
तेरे दर्शन पथ का सम्बल,हर पग को देता वेग प्रबल
हे राष्ट्र पुरुष ! हे शक्तिमान! लो जन्मशती पर शत प्रणाम !
शत-शत प्रणाम !!

सप्तम राष्ट्रीय क्रीड़ा महोत्सव

धावक है, तीरंदाज है, खेल-कूद में है माहिर।
राष्ट्रीय क्रीड़ा उत्सव में हुआ यह जगजाहिर।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com